डॉ० अनिरुद्ध प्रसाद
महाराजा कॉलेज
हिन्दी विभाग

10th Paper

निराला की काव्य-साधना

प्रश्न : पठित कविताओं के आधार पर निराला के काव्य-साधना पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: निराला छायावाद के प्रतिनिधि कवि हैं। इन्होंने अपने लेखन की शुरुआत ही छायावादी कविताओं से किया। छायावादी कवि मूलतः प्राकृतिक चेतना के कवि माने जाते हैं किंतु निराला की प्रतिभा मौलिक और विद्रोही थी। निराला के प्रारंभिक रचनाओं में प्रकृति के सौंदर्य और मानवीय संवेदना दोनों दिखलायी पड़ता है। 'जूही की कली' और 'शेफालिका', 'संध्या-सुंदरी' निराला के प्रकृति सौंदर्य की कविताएँ हैं। किंतु निराला की काव्य प्रतिभा का उत्कृष्ट रूप 'राम की शक्ति-पूजा' और 'सरोज-स्मृति' में दिखलायी पड़ता है। अत्याचारी शासन, अनाचार तथा शोषण के विरुद्ध लड़ने के लिए राम के पुरातन संघर्ष की चर्चा यहाँ हुयी है। शक्ति को पक्ष में करके अन्याय करने वाले रावण को अपनी पूजा द्वारा शक्ति के आश्रय से अलग कर राम ने रावण को नष्ट करने का काम किया। किंतु यहाँ राम के संघर्ष में निराला का जीवन-संघर्ष मिला दिखाई देता है। अन्याय के विरुद्ध लड़ने वाले किसी भी क्रांतिकारी का व्यक्तित्व आत्म-संघर्ष के रूप में व्यक्त हुआ है। यह राम कोई और नहीं, निराला के संघर्षपूर्ण का समवेत इतिहास है। विषय और शैली की दृष्टि से 'राम की शक्तिपूजा' अद्वितीय काव्य है।

निराला ने हिन्दी काव्य में जनवादी विचार-धारा को प्रश्रय दिया और अनायास ही छायावाद के कल्पना-लोक से उतर कर यथार्थ की धरती पर खड़े हो गए। 'नए पत्ते', 'कुकुरमुत्ता', 'बेला' ऐसी ही कविताएँ हैं, जो जनवादी स्वर लिए हुए हैं। उन्होंने पत्थर तोड़ने वाली अति सामान्य स्त्री को अपने काव्य का विषय वस्तु बनाया —

वह तोड़ती पत्थर
मैंने देखा —
उसे इलाहाबाद के पथ पर
नहीं छायादार पेड़
वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार
नत नयन, प्रिय कर्म रत-मन
गुरु हथौड़ा हाथ
करती बार-बार प्रहार।

P.T.O

यहाँ एक हथौड़ा है जो पत्थर तोड़ रहा है परन्तु वह युग हथौड़ा प्रकाश स्तर से अट्टालिका पर भी चढ़ रहा है। 'भिक्षुक', 'महँगू महँगा रहा', 'वे किसान की नयी बहू' आदि कवितायें निराला की प्रगतिशील और व्यंग्यात्मक कवितायें हैं। निराला की तीसरी श्रेणी की कविताओं में साधना और भक्ति का पूरा भाव प्रकट हुआ है—

काट अंध उर के बंधन स्तर
बहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर
मनुष-भेद-तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि निराला की काव्यसाधना में वैविध्य रूपों के दर्शन होते हैं। निराला ने अपनी कविताओं में रहस्यवाद को भी प्रश्रय दिया है। उनकी रहस्यमयी कविताओं में उत्कृष्ट करुणानुभूति के दर्शन होते हैं। छायावाद का पहला तत्व व्यक्ति का अर्थात् समाज चित्रण की अपेक्षा अपनी व्यक्तिगत भावनाओं का प्रमुख रूप से चित्रण माना गया है। निराला की कविताओं में एक ओर विषय पर विषयी मनसा के आरोप की स्थिति रही है, दूसरी ओर उन्होंने प्रकृति और जगत् के भिन्न तत्वों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया का उल्लेख किया है। उन्होंने समष्टि से अधिक व्यष्टि को अधिक महत्व प्रदान किया है। उन्होंने छायावाद के व्यक्तिवादी दृष्टिकोण में बहिर्मुखी सामाजिक जीवन की अपेक्षा अंतर्मुखी जीवन पक्ष को अधिक महत्व दिया। वास्तव में उनकी कविताओं में यह अभिव्यक्ति अद्वैतवाद के रूप में प्रकट हुआ है।

निराला प्रतीकों के सिद्धहस्त पुजारी थे। वे ऐसे-ऐसे अप्रस्तुतों का चयन करते हैं उन्हें याद किए बिना नहीं रहा जाता। उनकी प्रतीकों की सबसे बड़ी विशेषता है सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होना। मूर्तिमत्ता और सजीवता के साथ भावनाओं और अनुभूति से साम्य रखने की विशेषता जितनी उनमें पायी जाती है, शायद ही अन्य कवियों में। कहीं-कहीं दुरु-हास्य तक आ गया है। निराला अपनी कविताओं में रूप के स्थान पर भाव-व्यंजना करने में अधिक सफल रहे हैं। डॉ धनंजय वर्मा ने निराला के संबंध में लिखा है— "काव्य-प्रक्रिया में दैवी प्रेरणा, संस्कार, प्रतिभा एवं साधना का समन्वय निराला ने किया है। प्रकृति और कल्पना के योग तथा काव्यात्मक सहानुभूति अथवा संवेदना के द्वारा वे काव्य की सृष्टि मानते हैं।

P.T.O

काव्य के बाह्य परिवेश से वे निरंतर मुक्ति के पक्षपाती हैं। छंद और भाषा की मुक्ति के साथ वे काव्य के अंतरंग भाव और क्रियाओं की नवीनता और मौलिकता का आग्रह करते हैं। यही उनकी स्वच्छंद दृष्टि का प्रमाण है। काव्य और संगीत का भी उचित संबंध-स्थापना निराला ने सिद्धांत एवं व्यवहार में किया है और छायावादी प्रगति काव्य की संगीतात्मकता को उनकी देन महत्वपूर्ण मानी जाएगी।"

निराला छंद के क्षेत्र में 'क्रांति के अग्रदूत' थे। उन्होंने मुक्त छंद का प्रयोग कर कविता को बेड़ियों से मुक्त कर दिया। अज्ञेय ने स्पष्ट कहा था — निराला के मुक्त छंदों में भी एक आंतरिक लय और संगीत का निर्वाह मिलता है। उनके काव्य में वर्ण-मैत्री, शब्द-मैत्री, भाव-दृष्टि आदि का निर्वाह सफलतापूर्वक हुआ है।

P.G. semester III
10th paper
Nirala ki kavya sadhna